

ध्वजध्वक

कविऋमातं नाम पुट्या कथं ॥ गगु ४ कमात्रे ॥ दस २ धम ॥ पृथिमार्गस ॥ कीजमकिगाभत ॥ धृगुधनसचोन ॥ धृगुनगव ॥ धृगुनाजगु ॥ धृगुनाजगु ॥
 हस्ति अश्वस्ताने ॥ सलम ॥ पुये ॥ देवगा ॥ धन ॥ कृदा ॥ गज ॥ नाग ॥ स्ताने ॥ सर्व ॥ हस्ति ॥ स्ताप ॥ यग ॥ च ॥ पून ॥ नृप ॥ मि ॥ मकि ॥ पू ॥
 अहिगं ॥ सर्व ॥ से ॥ न्य ॥ पु ॥ मू ॥ ट ॥ व ॥ व ॥ य ॥ क ॥ त्य ॥ ना ॥ ॥ संग ॥ म ॥ नि ॥ मि ॥ ह ॥ हस्ति ॥ अ ॥ श्व ॥ य ॥ थ ॥ पू ॥ य ॥ य ॥ ॥ क ॥ मा ॥ य ॥ व ॥ च ॥ ल ॥ श ॥ ला ॥ सर्व ॥
 लाका ॥ समू ॥ पा ॥ स ॥ ए ॥ र ॥ ह ॥ धृ ॥ ज ॥ प ॥ ज ॥ य ॥ न ॥ ॥ ग ॥ गु ॥ ४ ॥ स ॥ र ॥ ध ॥ ने ॥ ग ॥ म ॥ न ॥ ॥ ने ॥ मि ॥ मि ॥ पू ॥ अ ॥ हि ॥ ग ॥ न ॥ ह ॥ ह ॥ ॥ म ॥ न ॥ चि ॥ न ॥ य ॥ ॥ अ ॥ द ॥
 आ ॥ श्व ॥ र्य ॥ म ॥ मे ॥ न ॥ ल ॥ र ॥ ध ॥ ॥ अ ॥ क ॥ स ॥ ना ॥ प ॥ उ ॥ क ॥ दि ॥ मि ॥ य ॥ व ॥ र्ष ॥ म ॥ म ॥ चि ॥ गु ॥ गु ॥ ह ॥ न ॥ ग ॥ य ॥ पु ॥ स्त ॥ न ॥ य ॥ ॥ ग ॥ गु ॥ ४ ॥ नृ ॥ प ॥ मि ॥ ४ ॥ ट ॥
 न ॥ द ॥ अ ॥ न ॥ क ॥ य ॥ ग ॥ म ॥ न ॥ वा ॥ ध ॥ न ॥ न ॥ क ॥ मा ॥ य ॥ ट ॥ ह ॥ ॥ अ ॥ व ॥ ग ॥ ध ॥ स ॥ ध ॥ म्मा ॥ व ॥ मि ॥ क ॥ मा ॥ य ॥ स ॥ र्व ॥ य ॥ उ ॥ न ॥ पू ॥ न ॥ ॥ मो ॥ यो ॥ च ॥ ज ॥ म ॥ नि ॥ श्व ॥

सुधमी वगिनि या ग र्ने
 जन्म रज म १

[illegible]

सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना
सकलं जिहः सं सकलं बना को धरुया ना

एन नु नु वाधिगा ॥ गग ॥ ४॥ कूमात विदार्थी नां समापुर्दाया घं वधयग ॥ १॥ गिनाजा वचनं शु त्वा मनि प ग्धायेन
नना नं वगुन गवगया विनकाजान हान दया चीक जवपि त्वाना मने गि काजिरा रदा य पुजा सु क प्रमन को १० का विन कूमात या ग मा जने न सकल न सा रुत
सिधु वगुन ग समाच ॥ गग ॥ ४॥ समूपा वि श्व सम निरु न पा पिका। कूमा वं पु वय के सम के ग ॥ ४॥ धन या ख धृति ॥
हान सुध म्मा वगि म्मा ने ध ग व सिचा ज ध ग पु ग मा सं पु र्वा र्त्त क ना ध म र ए ग व जि ह का य क धे ज या गु दि ने ध ग थ स के गु जिव या गु आत्मा सं सं य रु ज के जि ह
गग ॥ ४॥ सुध म्मा वगि म्मा चा वः पू गं सर्व वा की स वा द य ग ग म मः पू यः अ स्मि न्दि नः ग व ॥ जी वा त्सा र्ज स यः म म न
म ध न र पू य व लै ग मा क न ध नि गु पु ग या रु क्त ल ज प्रा ना वि त ध द र सो धू वे या क्क के डे पू ग के र सा ध धि गु थ स वा स नी च मा र ध का द ख ग य म ने पु सं ग प या ना ज न्य म ने ध क धा न
टक्का ॥ यत्न वज म नि पू गं रु सं द दा य य ग ॥ सा धू ग नू पू ग न तं गु म व ना क य सृ त्व नं सा ग य ॥ पु ग्धा येन ग न य ग ॥ ४
मि धा र्त्ता वि ला यु का स्तु मि क त्वा न व च न आ गि र्वा द वि या म रु गु क या ना वे ना वि यो र्त्ता ने धू क क वि न कू मा न धान धू क व ल वृ ग म नि ध य ना म नि क थ ना ची क वा य व क वि न कू मा ये
सुध म्मा स्व सि म ग ल व च नं आ गि र्वा द म हा ग व ध नं द दा य य ग ॥ गग ॥ ४॥ वज म नि धा वि ग नं द य क कू मा वः निर्ग म
वि स म न हान जव पि धा म गि नं मा ना मा जा रु या हि गु दि ना ग्ध रु न मा ना रु न वि स ज न गु मं नि ने र व न स ल य ग नृ प गि ना या पू य धा ख ज ल वृ ग म नी ग म
म ॥ गग ॥ ४॥ म नि स्था न स्था नां ग व ग म नं ॥ गग ॥ ४॥ व व ना क य म नि ह द्वाः स प व ग नृ प गि पू य नि श्व य ॥ किं दि वा

कानं धा सा

विक्रय

गुफयानाविस्मयजन

लान मलमाजायाजाहगमधन्य

धनकविप्रक्रमान

हमयापनिमिगिन

लान

यूपः संप्रकाशयममहागुफेन निर्जगम ॥ गग ॥ स्याम्याहगगीयसीः कमायं वधनिमिर्दिने सन्यसंवादयेन ॥ गग ॥

धनकविप्रक्रमानलानां वनायावेगधया धन आवावाजन जस्य वि

चंपकनागनागायादहननेस

कावागं संपूर्णसिनि

पोदिनाकसकने

जस्य

कमायगासनः मृगनिर्जगम त्रिगं त्वेपिगं ॥ चंपकनागवासस्थानं पुष्पगं ॥ सर्वसं नृपृष्टं त्वेपिगं रजस

जस्यकयाहन

हाहाकायतायव्या सुदुयना विनाहने

लान

नागनागायास्थानं धनकविप्रक्रमान

सिपादिमधेना

सक एनं माजशरुवान

असुपुलायनेः हाहाकायसंवेन इवगं ॥ गग ॥ नागवासस्थानं पुष्पगं ॥ सन्यनः नृपृष्टं सर्वस्थानं निम्पयगं ॥

जनजनगनजनधकधन निर्भययावमके मतिपिसंमानजन

एवमनुमानमवनाय पनकनाम विभाकायसंग

अधियाग अनुदयागुगियापानी

पहनसिअकके

कमानसूयके

कगगकगस्तिगं निर्भूयः मक्तियत्ननः नृपृष्टः पगवः वायपुत्रुषसामृद्धिः नयपादचिद्रपुष्पासंपूर्ण ॥ कमाय

लान

मपूखनं कविप्रक्रमान

सूयकेमरुया आसा रुयतिहाजेल

चलान धनकविप्रक्रमान

दिवानूपरुयाची मलमगदके

पूषकेमजगु

मानधकम

पदकचायपूत्रुषं पुत्रुषके समकेग ॥ धनयावधूति ॥ गगुगसम्पासिनं दिवापुमरुत्युहं ॥ सोम्यपुपसूर

पदके

स्वयगुंययापू ॥ अने ॥ गिसानगियाधंवा नमाकप्रपूषकेमजगु ॥ जवगागु कोजसनिद्रक

धनयत्नगेजइके

अजवना

चंपकनागनागाया

मनेस

आंगेदिवातकायममतिगं ॥ मरुकीवाजमनिसंयुक्तं पत्तं ॥ पग्धकं चम्यकनागनाजस्यः गिष्टके

मलकल्यान
याना

धनामलहातनाकप्र

अरुणाय नमः
विस्मयाचिंतं ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥
या नागनागने कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥
सुग विवाजय ॥ कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥
त्रिधो पुनस्तं ननु वृत्तं निबोधय किं विस्मये ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥ गगनं कूमायै ममैका नमः ॥
संन्ये पुदय ॥ नागा वा घं हा हा का त स सं अष्ट पुहा जय ॥ नागा वा घं हा हा का त स सं अष्ट पुहा जय ॥ नागा वा घं हा हा का त स सं अष्ट पुहा जय ॥
नागनागस्य महावाजस्य अपविगः ॥ धीमहि गीता जय जय ॥ धीमहि गीता जय जय ॥ धीमहि गीता जय जय ॥

[illegible]

कस्तूरी मणिदत्त संस्कृतया चोक्तं धनकमात्रेण नागयाके विस्तारं विगियाग धदेशसाधुधया कुरु चोयानिनिधिसा
 यि नूतनमूलिसेयुका कूमाय नागजाजस्य निवेदयति विस्तारं ॥ साधुं नूतनागजाजस्य मम गमनी नवमभनं
 जीपगस दणकनूना पुसं नूतनयमानधक हान कविनकमान नागियासमयदना सकनयादुदयेया नाने गमनयानागने मसनामस्थानि एयमदुमरसा
 यवकु दयाका नूतन पुसत्र ॥ गग ४ दायकस्य नागिसमयदह न स्थान पुस्तानयन ॥ गग ४ प्रागकारं एधियत
 एयनं हानाज धूयायाकेसे दहाजना सूनायेने हान यदकनाम नागवास्या धनकेया चाकनउना सोवहनरुस्थि कविप
 यसमिगे यजका वस्तान पुविस किमहाभययग ॥ गग ४ पदकस्य नागवास्तान पुदययगट द्याः कूमायप
 कूमायविसेजन अननं उगीसं कूमाययाग नागियाग निद्रिसायागे यदकअमूदिकने एयनाज धमपनायाचकेना महाबाचयाचायाज अनिविसयकुरु सा एयकनयानाज
 यायके गग ४ दायकस्य पादकाचिद्रं सामुदिकस्य द्याः ॥ वितावरग महाभयसंविस्मय एयाकला ४ पु
 यथगुगजसु अहजना सकनवेजथयाजेन हान धूयायाकेसेचोचावेन धिययोग हान धकविनकूमातवेसाजि धूयायामेनस
 गृहस्वसगस्तानि पयायके गग ४ दायका वस्तान पुदययग ॥ गग ४ कूमायदभय ए यजकायस्य
 अतिकरुणयसासत जिगुधामेगजवजक संकटनजिधसजज आगजिनेजकायायमाय जिगुडेनाधसा संपूर्ण सनि सिपादि
 अगिपृथनह द्याममस्तानं गवर्ज आयाग ॥ संकटन पुविसया ॥ ममनयज्जहायन ॥ ममगृह सर्वसया

धूयायाकेसुधनधकाज ४

मंगियादुग्धभधान हेममि महाभानदनं विस्मयन ४

६

विजया नाचोन धुगुधु जल जिंयायमान दिगाधोवस दिगादिउजनेधका
दिवालयन गव ४ जत्र वरु गजाक उरु गियत उरु कस्य नदिपावगमन ४ ॥ गगो सो सपवगस्य पूगः समका स
सयजया वादीरगनाजज कूजययाऊससुनाचोन रुधकर्मयायगु समर्थवसाने धविगुसमयसायाज यायमजिअधका लजपेचोन नज प्रका
यन्निगुहा ४ पुविसगै कूमा कातनि वसन ४ ॥ रुधकर्म पुका अन उक मिसमये विवाययन ॥ ॥ गग ४ ज
जकायगु ४ पदके पुविसगै नह द्याः सर्व सन्यो गगावज कावस्थाने कूमाने सून्य ४ ॥ पदक सामूदिकस्य
पात्रियागु विम गन पूमवनाज जवधिधामेनियोक विस्मांग विनियोग लान विरुधरुतेयायधन धकूमा न ध्रुविविगिया से
वायकस्य पाइ काचि जइल रं दश विद्यानस्य निवदयगि विस्मयं ॥ पुन ४ पग कावाच ॥ ॥ गगिसं प्रार्थ
माना सो गपित्वा नगी मरुमगि ४ पगक वाय पुत्रुष माता वगयगि मेव वीग ॥ गग ४ ससमूपा विग्ध समकि
यादि होरु नमनेका पगकहिजेक धयसस्वया दिउदिगा कौडीअनं जेगु सो यागा धासा दूखरुज लान धधगुखना हाग धकूकविजकू साजया प्रावजा धासा
जनधोयिक ४ सामूदि वाय पुत्रुष यथा यथा मार्ग समूपा भयन ॥ गग ४ कूमा कावयाअने कूमावदअनः

अजहगवायाज ४

धनपिताअभधनकनधक विनियोग ४

यगं अग्निकृत्वा विष्णुं एवित्यगि ॥ समस्तानं भवता गगं यथायुकेन यज्ञा कर्म ममेन कृत्वा ॥ ममेन गृहं अववाजं
न सर्वं रक्षादिना दयगं ॥ गगं पगक सामुदि सर्वं सैन्यं कृत्वा कातस्तानं पु विभयं कृत्वा कायस्य गगं नं शिष्टं म
र्जा उत्थापयगं ॥ गगं कृत्वा यं अववाजं न पदास्वतादि पृष्ठमाता समर्पयगं ॥ चतुर्थं पूज्यं समुत्तं नाना वाद्य
नः पूज्यं दयनं निर्ज्वनं संपूर्णं ॥ गगं कृत्वा यं गत्थं न च दयगं कृत्वा कातं गृहं पुर्वं गयं ॥ गगं पद
क वचनं सर्वस्तानं ययगं न हृष्टं ॥ सां मुदि पाद काचि च विचारयगं ॥ दशमं कन सर्वपाद काचि न इतरं ॥
उगत्य कायं पदं कस्य वाच ॥ ॥ गगं वचनं शुक्लं समन्विजं न पौषिकं निर्ज्वनं संपूर्णं ययगं ॥ गगं

आकासं धर्ममात्रं तस्यैव संविदस्यैव सविता
जगत्पतिर्जीना धर्मगुरुः अस्मिन् धर्ममात्रं कविर्द्वयकमान कथकागचो न अस्मिन् कथका चो न

इयान्ते कृमावर्धयन् मन्त्रि सर्वस्य आदि स्वस्वसाधनं पुत्राय यन् त्वयि गत्वा विगमनः सा कर्मकाद

यन् सा सा भविष्य सर्वं यच्छविग ॥ गपित्वानस्य पुत्रि चिगिर्गमनं यत्तिसं मरुतं गवकृमावर्धयन् म

निर्झर मूर्ति अथ वेगस्य त्वयि गं ॥ गगं कृमावर्धयन् गस्य त्वयि गं ॥ गगं दाजकस्य राधाधरः नृदृष्टः

महावेद ॥ अगमस्तुताने कृमावर्धयन् ॥ गगं अगमस्तुताने वृक्षमणी कादयन् ॥ पृष्टं मन्त्रि आगमन

दृष्टं ॥ गगं वृक्षमनि मन्त्रि समादिगं संपुमादिगं ॥ गगं पांचात्रिंशत् कापित्यनगवपुधमं मन्त्रि जन

यो विगं आगगं ॥ गगं समूपाविष्म मन्त्रि जन पीयिकं अतोतुगमहर्कं पुनत्वा समूपाशुयन् ॥ दाजकस्य

अथास्तुताने निजिकं

कथा विनिर्वाण ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

गामदेअ केव सर्वस्वा न संअ मवा र्ण व च ने सेवा दय ग ॥ गग ४ जागा ह सं पत्त वृण म वि सम र्प थ ग ॥ ध नं सि
क वित क मा ज या ग लि ना अ य नाः दू कः पत्त वृण म नि क या ह या ना जा या ग त ग ज्ञा ना वि षु या ट थ न या ट थू पि ॥

अल्ला स म न ना जा या म न टू सि रु याः सु क तः म कि या ग प जा ग नः सि पा दी स क स्था गः ए दि सि सा मा त वि तं ॥ थ

म नं ना ष च य पा ना अ ची न र तं ॥ ग ग ४ कू मा रं अ ज न म हा य उ सा स्था ने उ उ धा य थ ग ॥ ग ग ४ अ ज न स्य

स्व शु वा सि ना अं ज न स मा न व र्णः य उ य उा ए वि ट्थ मि ॥ ग ग ४ कू यं पृ था पो ड कं ग म नः मा का ग स र्व प डि वा

स ने नि वु ४ ॥ ग ग ४ सू ध म्मी व गि श्म पि ट्थ न स्य स मा चा रं स मा दि ग ॥ म न पु ह न ए उ पा ग स्था न

जा या ग थ ग ॥

गे॥ गन॥ साचिगुमुमइ जंपुवेस॥ नरसर्व॥ धानं नहृद्वाः महाइयं पिगत नामः॥ एदयगु॥ पिगनाऊ अमिमिदाव
 ८०३६ मग दावकस्यइ गवस्का नं पुवमयं घनं पुकाभयगु॥ अस्मिदिभं कूमायन उकपूवृषहृद्वा दावकस्य क
 पुवमिदिभं पुकाभयगु॥ गगु॥ पूवृषस्य संकहृ पत्रिगुग जगसर्व धानं उगयनः उकपुवमयं मा नापिगा ना
 मपुवमिदिभं पुकाभयगु॥ एधिवस्का नं उवने प्रातिना पुवृष अस्यै वेदना गुनाः पूवृषस्य स्मिहृकि पत्रिगा
 पिगा॥ उगत् पूवृषस्य वेदना कूमायनस्य हृद्वाः सा अगके अजायग दावक गगनं॥ साधृइ पूवृषः अमि अदि ग
 न वेदना क हृ पनायगु॥ किं कायन इगं वन जागगाः कूमायन पूवृषस्य संवादयगु॥ गगु॥ सुमानवः महा

ज्ञान यगुचिर्गुमनयाना दूनवनेगन नरमनुषे सायानमइ यधिगुवर्षनस मय दूनवने व्याधकृ कूमायन नापनाग सपूलायुमिषा ८०३६ मग अधमि
 एव्याधानं दूनअभंगव केनागधया कूमायनाग अगं उकपूवृषागदिभं कूमायन कृष्णपूवृषयन कूमायन वनाग
 कयनाचिर्गुगया पूवृषयागधय ज्ञान पूवृषयागसा संकहृपत्रिगुमरयाचौकृ धयाकृसकृएने धायेरयाचौन हिपूयिहाअयाचौन मायागु वउयागु ना
 सकयाग हरेमाधकावनावयसा मिता नं विविधिका योचौन धूगुप्रकायं पा निरुने पूवृषया वेदना संकहृनया केकेगुं पूवृषयना अगदूषभायगाअ ए
 ज्ञयागवाधुवि अजपूवृषयागु वेदमनयो यमनहनागयन धूगुधंनं अगकसहृसो विमिसरे हनाचौन हसाधृदूषपूवृष सुनाग्वकस्यन
 आमायिगवेदना क हृनकागन कूकानन धनइगं वनेगयाचौना धयाधकाक दूवपूवृषयाकेनं ज्ञान दूषपूवृषनं महापू

३

२०३६ मग सायानमइ

४ ज्वलज्वादागुना हृदिने हत धायेगनाचौन३

कापेनापधनगिनाचौनकृ४

अंयिकया२

हिपूयिहाअयाचौन३

न पागय धनं का म पा ना नोन
 अथरः सुदासस्य मम प्रक पियम ॥ पुमिदिने नुगत्य कात ॥ ॐ गिवचनगुत्वा क मात्रस्य निनायुध ॥ ममचूण
 मनिहयनः मम किपूयाजनः सार्थिमागुत्वा तं हाहा प्रालक ह ॥ गगः सावि त्मा कनू नः गृणा हृदयय
 व्यदना रविष्यमि ॥ गतु वमागु क ह एव ॥ गगः जूयका ह उ उ नी स म अ य ग ॥ वनिक पूरुखं या दना भ वः
 सार्थवाह गा भ ना धि र न ॥ एग व म म ना ग क मात्र क र्म किं पूया जन वा धि स्तानं ज न म म ॥ ध सु या गा नृ
 यमि य ना धि वे यिः म ह गा यि न च द य र ॥ स ह सा स मू पा ग यं म नि र न पो यि काः स स्व स ह धृ त्वाः म म उ द
 न नि मि र्द ॥ संप क स्तानं भ ज व ग त्वाः ग व का द य ग म म ॥ च पु न र ज का व स्तानं ग म म ग म नः ग त्वा

^{भाजगा ६३} ^{अंननं कूमाया कूस} ^{विश्वजना} ^{जिग धननं} ^{भाजगा ६३} ^{कद्रुयाशदिनस} ^{दूजवनागजजि} ^{महाज्वध}
 ने कादयग ॥ गग ॥ बुक्काय गृहं पुविभगिः ममग वस्तान कादयगः ॥ उकस्मिसमयं नानुगत्वा अग्रधन
^{अंजनाद्रुसया} ^{सुमेनजना} ^{धननं} ^{जिग} ^{भाजगा ६३} ^{धमिजि जि जका मरु धनगकजाननं} ^{दान} ^{धुगुधस} ^{सुनाजिगजकाययिहएगवने}
 अंजनस्य अग्रवर्मम ॥ गत्थानं ममने कादयग ॥ ॐ निममज्जान ए विषयगि ॥ गग ॥ गधकीयिन्ययशः एगव
^{हाहादेव} ^{जिगुजमनेयाधिकार} ^{मनहाययवाववेयस} ^{धुगुधसे} ^{सुनासनामध्याधवकायज} ^{धनकवतामानाजिक्काक} ^{जयागुदिपिकयाज} ^{ध्याउगुमिवाया}
 ममज्जमकिं पृथाज्ज नः मनपुपिचिकय ॥ गग ॥ सूदासर ह आगगाः वलुगुजः वनाहस्यैक समर्पयग वद
^{हमिकंयमानरुजधलुगु} ^{वांवाजज} ^{सुदासवाधियास} ^{जयपगसजानिम्} ^{धियाकमसिउगया} ^{गयाटक धुं धिय वाधायसेहिने}
 हमिकं पायः महावेगत्तजिआगगा ॥ वामैर्ध्वं गेव मूखसायमयः ॥ गेव मूखस्यैद नैः चाकं काकं पादयकं च
^{कि काज} ^{हमिसचूपाजय} ^{वयापिनीगंरुजगाकथ} ^{वामयसायागं} ^{धुवधनया} ^{सकन} ^{वनाहवधिया} ^{अयजजयं} ^{अंममिधिविचान}
 दयगपं धीगमगृ ॥ मृगधर्ममंगलगः समयाभिः गेवतः सर्वसूकः सर्ववजाह उयवने ॥ सायमयः विधि
^{संपूर्णकि} ^{सिंयावधनसपद्रुययार्ज} ^{वनागत्रसं} ^{सिंरुजागयाग} ^{दूवयानागं} ^{धवनाज} ^{वनयानागहिं} ^{कि} ^{सिंयागंस्यायगुमकाज} ^{संयम}
 गाः सर्वहस्तिस्तानेपजयः वनाकयं सिंहनायपपिअमः गव ॥ दृष्टं न वनयार्जनहस्तिमर्थननसर्व ॥ अथ

म
 कायागधुमिदका नेरुधनमयाज
 म

जयभयधसा २
 विवायाजधसा ३
 लाहारगग २

^{विचिंतनं कुरु कायया नो}
 मूर्तिं हं हं कायमभुं न आगताः त्वत्तिः वे नू सर्वं मृगं दि सर्वं जनुं विस्मया नि पु विसन ॥ कूज कूज न ज दि गियं कू मा
^{मात्रवना धगुधसं सकुजं गुपि विमंगु साया धगुधं कुरु कुरु महावेगनं विस्मजन}
 जस्य हृद्वा गगं सर्वं जनुं पु विसगा हृद्वा ग वं दा ज कं महा वेगनं पु विसय ॥ गगं सू दा सस्य हृद्वा गगं सस्य
^{विचा माना केग वां बंधक धया कूमात्रया विमने संषमूख विचा वां वां जना विग धगुधं कूमात्रया योना कूमात्रया जं जं}
 जमयः आदयः समसमासाः कूमात्रस्य पृष्टः अथ मूख आगता हृद्वा ॥ महा वेगं समर्थं पु विसय ॥ कूमात्रस्य प
^{पत्रिभुमरुणागे जंतुमागयाज चाका धं के विमंगेन अउयसूदासनामवाधुज धसाया धनू कवेना जना अगुधे यवेन धनकसाया विभके क}
 विरुमनं आमतक डमः कुरु पु विसगा ॥ पृष्ट सू दा स आगता का गं हृद्वा गमन धवि कं नू समसमासनं आद
^{यका अग संषमूख विचान कुरु काउना मिं नि नूया चाकतउत वाधनंधनूष सुवजादयाज चाकतउता धसाया जं चीन}
 यग ॥ अथ मूख हं हं कायमभुं जगभयं त्यु दजनेः सू दा सस्यः सवना गमन धवि गं पु दज आत्मा का गं हृद्वा ॥ ता क
^{लान विचा या गु जं सवया वाधनंधनू कवेना साया लालकाज जदया ना दिना धगु कुरु हृदि साया कूमात्रया गधन}
 उना ॥ स्थान स्पद न हृद्वा सू दा सस्य सवज हृद्वा हा हा कायमभुं हा स्यं कुरु हृदि हृदि हृदि हृदि संवादय ॥ जाज स

विचा आउ क साया चीन १ आधका धया आग ३

महा वेगनं वां जनां जना समर्थ दन ले विमं जन ३

११ मयि विहं जना न क

जाग्राज्यासिने चक्रवर्तिमगाय अथवागजधयवृक्षेय जिगुसपिर्न धवाधमनापं रुधकल्यानायायदूकृतिं जिभाजक्याययदूयदूय अरुमदुअरु

नःनृणामाजनाजवहात्साह"अथवागजनाह"ममभयिर्वसुदासस्य"राधकल्यानाजग"जमिदिभउय"भसंज
मदु इलोहरुयासन इगवनं कृणमनिहृयनं रुय जिगुवदामनिधरुगुरुहा जिहिमा आकासमार्गसे जधवास्थनृगधजि कसिनजेने विधगानं
सै"इलर"एगवन"कृणमनिहृयनं"ममनं"कृणमनि"पुवभयग"वृय"मार्ग"काभ"पकिपुवाधयग"विधगा
इषविद्या इहमलचंननयोध विवायागवृषिहृय यउयययवि सिनेहृगुनके मानायायगुगुधयागयानाधमामदु मागुमानेयाभा
उ०व"इष्टंपुत्रिकिगै"स्वानं"कायननरविषयि"अकावस्यसिनेहृगुनमानादानंकिंविषयजन"मिहृएगव
नेहृएगवनकिपियोजन वंसं प्रसंलसिदेव सकनइगीगुन कृणमनिजि गजायाहोके सकनपूनेचंद्रमाया यगुरुसजन्मरुजं धविक्तविता
किपियोजन"कदाचिगैहृएगवनसर्वइगीयकृणमनि"जाजलावसर्वपुर्णचन्देसागरुंजमः"जुगत्स्वान
याहृके व्याध्याहृकेसनागहृएगवे पूर्वजमयाकर्मयागजरविषय अरवकृत्र जमजमानकप्रविगेकर्म कर्म कर्मपूवार्थयाकहाय
स्य"व्याध्याहृसंएव"हृगव"प्राकनकर्मन"पत्रसर्वअधियः"जमजमानकप्रपृष्टर"जागना"कर्मपूवार्थवि
चुद्ध"गग"संसात्रदहृजमइलरं"गुनसर्वकिपियोजन"इर्जनस्य"वीधननसर्केग"यापजातेवासय"स्ववं
सायरविमान संसात्रजिधिके जमहृयमात्र गुनधाय सकनकेपुयाजनके इर्जनयागवृऊययाय मरु यपजातेवासयाने

आजक्याय २

नस्मानगुगुत्रिकर्मनिगयधरसदांरुज २

यगुवंसया त्रिसापययि क्रुचंद्रमाहून
शोभायाधोक्र

अथनमस्तदुषरुच

शेषनमस्तदुसा

पानजंशुपरुचा

जीपगस

अत्रिपुष्टरुच

महाएयंमख

हान मनद्रुयि

भस्मनिभक्तः सर्वेऽनुगमः महारुद्रवपयार्धः इत्यहं प्राणगसयाः परनुभविपुंरुयं महारुद्रव इत्यहं ॥ मान

निमिर्लीनं

दूमात्माया गहागि सनाग

यगुथां कुरुनात्माया चिगुरगुक्रनं

जगुयायि

यगुथासं कुरुनाचोयपुक्र

नास्तिसिपाहाजानपा

ऊया निमिर्लीनः उजात्माहस्तु स्तित्वाः गवः कुरुनात्माः चिगुनममयैज्ञापूर्व ॥ गगः कुरुनायमानं कुरुनाजतिः

शोभायावताकिंगअययाग

सुमनयाहने

कावनसर्वेति

कुरुनागयाअ

महापूववनयज्ञायाकेप्र

कुरुनागयाअ

महापूववनयज्ञायाकेप्र

कुरुनागयाअ

शोभायावताकिंगअययाग सजर्न ॥ निकायनः वेयिहृष्टममः निकायनं कुरुनाएवः महापूववनयज्ञा

कुरुनाययागनेस्मान

जिउधा जयाअधकधया

हान वायंवायंसुर्मनयाना

अंम्वकेया

कुरुनामयेधकनामकया

कुरुनामयेधकनामकया

कुरुनामयेधकनामकया

कुरुनामयेधकनामकया

कुरुनामयेधकनामकया

सुवलाहविशुपुनामः कुरुनाममयज्ञाउद्वायः ॥ गगः वायंवायसुमयलागः आमलकानिः कुरुनामयत्यपु

नमस्तयाना

जिउधाजयाधकलवनुया

मिवागिसियाअचोन

अंम्वनिपायाहागिहना

हान

अंम्व

विधधजीनखने

विधधजीनखने

विधधजीनखने

विधधजीनखने

नस्वाममउधायलवयंगविरुवेधनस्तित्वा आमलकानिः समर्पयगः ॥ गगः आमलकानिः माधननामन

दिवादिहीसायाज

हान

विधधप्रिदुवि

अकाययाग

प्रसंभाविचायेयाग

कुरुनाचिर्हयानाअ

महावेजनं

महावेजनं

हृष्टाः विधाधनस्पदिवा हृष्टिहृष्टाः ॥ गगः कुरुनायस्य अकायस्य पुष्पाविचायः कुरुनाचिर्हयाना

हृष्टाः विधाधनस्पदिवा हृष्टिहृष्टाः

हृष्टाः विधाधनस्पदिवा हृष्टिहृष्टाः

हृष्टाः विधाधनस्पदिवा हृष्टिहृष्टाः

हृष्टाः विधाधनस्पदिवा हृष्टिहृष्टाः

१६६३ ॥ ३१ ॥ ३३ ॥ ३५ ॥ ३७ ॥ ३९ ॥ ४१ ॥ ४३ ॥ ४५ ॥ ४७ ॥ ४९ ॥ ५१ ॥ ५३ ॥ ५५ ॥ ५७ ॥ ५९ ॥ ६१ ॥ ६३ ॥ ६५ ॥ ६७ ॥ ६९ ॥ ७१ ॥ ७३ ॥ ७५ ॥ ७७ ॥ ७९ ॥ ८१ ॥ ८३ ॥ ८५ ॥ ८७ ॥ ८९ ॥ ९१ ॥ ९३ ॥ ९५ ॥ ९७ ॥ ९९ ॥

१६६३ ॥ ३१ ॥ ३३ ॥ ३५ ॥ ३७ ॥ ३९ ॥ ४१ ॥ ४३ ॥ ४५ ॥ ४७ ॥ ४९ ॥ ५१ ॥ ५३ ॥ ५५ ॥ ५७ ॥ ५९ ॥ ६१ ॥ ६३ ॥ ६५ ॥ ६७ ॥ ६९ ॥ ७१ ॥ ७३ ॥ ७५ ॥ ७७ ॥ ७९ ॥ ८१ ॥ ८३ ॥ ८५ ॥ ८७ ॥ ८९ ॥ ९१ ॥ ९३ ॥ ९५ ॥ ९७ ॥ ९९ ॥

१६६३ ॥ ३१ ॥ ३३ ॥ ३५ ॥ ३७ ॥ ३९ ॥ ४१ ॥ ४३ ॥ ४५ ॥ ४७ ॥ ४९ ॥ ५१ ॥ ५३ ॥ ५५ ॥ ५७ ॥ ५९ ॥ ६१ ॥ ६३ ॥ ६५ ॥ ६७ ॥ ६९ ॥ ७१ ॥ ७३ ॥ ७५ ॥ ७७ ॥ ७९ ॥ ८१ ॥ ८३ ॥ ८५ ॥ ८७ ॥ ८९ ॥ ९१ ॥ ९३ ॥ ९५ ॥ ९७ ॥ ९९ ॥

१६६३ ॥ ३१ ॥ ३३ ॥ ३५ ॥ ३७ ॥ ३९ ॥ ४१ ॥ ४३ ॥ ४५ ॥ ४७ ॥ ४९ ॥ ५१ ॥ ५३ ॥ ५५ ॥ ५७ ॥ ५९ ॥ ६१ ॥ ६३ ॥ ६५ ॥ ६७ ॥ ६९ ॥ ७१ ॥ ७३ ॥ ७५ ॥ ७७ ॥ ७९ ॥ ८१ ॥ ८३ ॥ ८५ ॥ ८७ ॥ ८९ ॥ ९१ ॥ ९३ ॥ ९५ ॥ ९७ ॥ ९९ ॥

अंम्व कविनकुमात्रं हानाको गुंम्व कुरुनायया असापकअन एकनदिहिनं साया कसा एवनिनिज कुरुना एवनिपंर

कविनकुमात्रं

विधधजी १

महाएयधनसहस्रदीनसाया
कूटस्थानः सर्वताकः ज्ञानमभेन विस्मानेऽगुपायः विष्णुदेवतागः संपूर्णमायाविद्यासंपुर्णनवसज्ज
नेत्रपुत्रपुत्रकुं हिंसाविद्यासुमनदियगः ॥ महाकायविकीर्तिताकनाथः पञ्चमभेन प्रायश्चित्तकर्मवि
धिस्काययगः किमभेन नागद्वयस्य वसासंजकृदि हिंसाकर्मसाधुः ॥ ममविद्यामांजः देवसर्व
वृक्षान्कपुत्रधियगः गगनविद्याधनस्य कर्तृना चिन्तनवाक्पुत्रो धेया ॥ गगनविद्याविभाजदकर्तृना चि
नैवायकस्य मायासाह विद्यासर्वगुह्यार्थयगः ॥ गगनविद्यामिथयदिनसूदनवासनेऽगवदा
चकस्य संपुसन्नैवाधपुत्रभगमनदद्यागः ॥ यथायथागमनगथासकस्मिन्नेनगुं विद्यापु

जनंयायमानिः

भवगुविद्याहिंसायायगजिगमयूर

कनगकायनसहस्रान

।अधननः

१४
१५

या ॐ नमो नमि सकलसिग नमः या ॐ नमः

^{सो} ^{रुपायि} कामयुयिह्याचोपि ^{सिद्धसार्धवजाग} हनं ^{वनिजावसकल्य} किमङ्गत्रवंजातसकल्यं ^{अएकल्यानसचोपि} ^{सार्धवारु} महाजनरुपादिसक
 नीकामयुयानिहसकपस्यः जागानं ^{वानिजातसकल्य} पिः ^{पेके} अगजनयोत्रिकाः ^{शृष्टिन} सार्धवाहाश्च ^{महाजन} ना
^{यथुगुधनसजाकोपि} ^{युगुधननानाचोपि} ^{सिद्धसार्धवारुयासकन} ^{वंजातः} ^{दयाचोक} ^{मृग्याएयहानाचोपि} ^{अपनिधसविज्ञानाग} ^{जोके} ^{अपज}
 उलायिनही ^{उगल्य} नपयधन ^{सार्धवाहाश्च} जनयोत्रिकाः ^{सर्व} मृग्य ^{एयंग} अयमा ^{गग} सपुस्तिगा ^{सोवता} व
^{यजगुनामनेजपिकयाज} ^{सिद्धजहीपसविज्ञानापुस्ति} ^{जाऊसिगनयाधसवि} ^{लान} ^{सार्धवारुयास्का} ^{नेजना} ^{मन} ^{चाना} ^{गजगुयस} ^{मगया} ^{गुमु}
^{सिद्धसार्ध} ^{कोह} ^{याग} ^{उपद} ^{सखि} ^उ ^न ^{या} ^{दि} ^न ^{चकि} ^{चोना} ^{जमान} ^{अंस} ^{गि} ^{वृद्ध} ^{प्राया} ^{गं} ^अ ^ह ^{नान} ^{सकल्य} ^{जना} ^ज ^{वदा} ^{गज} ^{धिक} ^ज ^स ^न ^{या} ^य ^प ^{रु} ^{या} ^ग ^प
 उपदअथग ^ग सिदिन ^{नी} गितं ^घ यग ^{प्रा} गयूखा ^{यंग} अथ ^न पुविअयगि ^{वा} राह ^अ सा ^{यू} पन ^{सर्व} पो
^{जासकप्रजन} ^{सन} ^ध ^स ^य ^{या} ^ज ^स ^{सार्ध} ^{वारु} ^{या} ^{पे} ^{वि} ^{वा} ^स ^क ^{ल्य} ^स ^न ^{या} ^ज ^स ^{चो} ^न ^{धू} ^स ^न ^स ^म ^ड ^ग ^य ^{या} ^{नो} ^ह ^य ^ध ^ज ^{गु} ^ध
 जागान ^ग ग ^अ सा ^{यू} प ^{स्यो} गु ^{सार्ध} वाहा ^प रिज ^{नो} सर्व ^प य ^ध न ^अ स्व ^{यू} प ^न स ^म ड ^ज य ^य र ^द अ ^{पु}
^{अधनकाविज} ^{सन} ^{सिद्ध} ^{सार्ध} ^{वारु} ^{जा} ^ग ^{या} ^{वि} ^{ज्ञान} ^{जाऊ} ^{सि} ^प ^{नि} ^स ^न ^न ^य ^ग ^क ^{या} ^ज ^र ^अ ^{वी} ^{धू} ^ग ^{पु} ^क ^य ^न ^{गी} ^{लोक} ^{ना} ^ध ^{या} ^ग
 विअयग ^ग ग ^{सिद्ध} ^{सार्ध} ^{वारु} ^ह ^{वि} ^{ष्य} ^{गि} ^{जाऊ} ^{सि} ^{नि} ^स ^{मा} ^च ^न ^प ^य ^ध ^य ^ग ^उ ^ग ^{ल्य} ^{का} ^य ^न ^{गी} ^{लोक} ^{ना} ^ध ^{या} ^ग
 सकल्य उधययाना १

सन ५

गुः नाऊ सिनि सना यजं ज कवा याना ३

२ धप नि स्यं नः नाम का पगु मनि हे मजा य दू स्य चोन

रुपायि अभा यो कया यन

मिषादृसिस

हान प्रायशमसा स्वा
उत्तनयावान

मिषाप्रयकं सायमम्याक
रुजनयाजा ३३

मः प्राचन॥ हाय२ अग्निनेवानयाकः हामतस्थानयावान॥ नासिका॥ ॐ दिव्यवाचनः दप्यन अहकायदवर्ण॥ म
 नं ॐ मंनं नागयाधः द्रव्यं धसादू नूनजालमान प्रयारुजध पासाजीवेनू ^{थनूगजसइइरुयावीक} ^{मि सा स पू नू} ^{आएनया}
 त्वत्पुत्रशगदक॥ विवृकः वपुनस्य पागं कर्तुं कृतुलन सुवर्धुपगुरुसु सुकेलसकू चंगन॥ सवीतकातका
 गगजगायाचीमिषा हाउपलेखानयोहनध वोननोक गुगियापात्रिगुः सायागसायागु माहुरुयाचीन हान मेहायगु विचोनया नाचीक
 त्वहवने॥ पयपसाः यकं पयपय समानयाइ कापृष्टः सासाहृष्ट नमोहसमसु ॥ पुनवाजगीगादीविचोययग॥
 हामिसनकेग मिषाकनेग असनकेग पनाट्याचकिपुगु थव्याकं मोहुरुगु सोयाडी॥
 पुवित्ररुपः अओलयः लिः अगन्या गहसुकायसर्वगुसुहयग्धग॥ गग० ॐ गौत॥ ॐ गतयातसयासगातका

१६

यतातपं हनासनः हपिषा लमकिस्त्रि आह्वदयकयः स्य० २ रुग्ण विषानः रुमकिः धमाहमयीमयहननेसं
 पूर्णैरुद्रमयीमयरु॥ ^{विगुविग} ^{हजनयाग} विगुविचिगुनः मभनः जिगुचिगुहजनयागः धमाहमयीः सा र्ज्या अपस जानि

सधचीन२

संधिनाचीन३

अथ नेत्येतिः स स अ प स वा या म ध सः भवन का धि या ज अ प स वा थः अ न्य स्था र त साः स च न म य ग थ र

मिवा स वा द का य ध न

उजः ग धि ग स ए व र च नाः चि उ वि वि उ प द व मः स म सः मि वा या स वा द का य ध नः आ म न न स ग म या य

अ न्य क श न ज न ज ग जी ग मू क न म ह न वा क थ न

ए व पा मः ग धि ठ स मा ल ल य कं ॥ स वः जी गः मू क ना वि ना वा ध ना यः थ स क ट न नः डि म न सा वा म थ सि

ह न ग धि न ग चि र्द

या क । स म स पु का व ने वि ना ल ग न नः डि म न स्वि त म र ॥ वी ना मे व वा गा व द्य द्य वा थ म ल र वा ॥ अ ह र्य वि

सू ना नं मू क न

जि ग वि र ह न न या न

ध रि वा नि नि ध ग ज पु सं ग या ना

मो ह म थ म य र वा य प्र सा न या न अ स

रु स र्व ह र नी नै स कः स म वि र ह र न ॥ उ ग त्य का व पु स स य म म ॥ ग र्ग ॥ की ज न स मू र्वः प म पू र्व न स म ॥

मि वा गि म का क

अ न्य म नू ज ग या न ग र स

को म या य गु म न वा

अ यो य म न वा ज या

वो न स च ना गि पि वा ज सो या चो न

ह न डि न स र्ग

च न ह र नृ प गि ह द य प थः का म वृ र्म म हः अ लो त नृ प गि र्म मू र्व थ न स्व द जा य ग ॥ ग र्ग ॥ दि न स

ना मा र वं ध य ग नः थ मा र का म या ल या ना नं मा र वं ध य र या म या १

ह न न या य म र्म १ ग थ धा सा १

अ जि न २

वो न २

यस्य जनपदं नि ^{मृज्जना}

कूटका मिनिस्सु पुमिमिस्सा

जाजाया कूटसु वा नाहुज

जाजानं रुजसां माहमयी मयहं खनाउ

गग ^{सुन} ^{सुन सुन}

खनाउ

गग ^{सुन} ^{सुन सुन} मूर्धधरकः सुखेन सवादय कूटका मिनी जाजा विनाउ ॥ गग ^{सुन} ^{सुन सुन} जाजनस्य माह माया हं खना ॥ खमगु

नः थ जाजानः इमे चिने माह रुयाउ माह विष न दाह रुयाउ धे र्य या नागात गाउ रुगा सने उका नु स

मजा माह माया मयि

वउ

विदित्वा नास रुक गुनाउ

मृज्जनाउ खान याना चीन

वा नाउ आतिग नयाय गग या न रुज ॥ जाजा या को की नू य ॥ गग ^{सुन} ^{सुन सुन} जाजनस्य रुस सं माय ग स र्या सन प स ग ॥

निज्जसिया धि धि रखा नास रुक गुनाउः ख ज्ञानाउ ख्या य या नाउ वा चः रुन माह माया मय रुंधा साः जा

जाया ग काम नाग म विम म या रु स्य ख नं ज क ला हा ग ने ज क काम नाग माह या ना चीनः जाजा या धि सा कामा

जवध य रु याउ काम विष रु रु या चीन ॥ थ न लिः थ गु पु का नं स वा द या यो र वा ची जा गु व ष ग सः ग थ

निज्जसिया

वां न नं ग या न रुज

[illegible]

कथापि ह वा ज्ञातुं जिज्ञासा गति सजा गधक धाये न ग ४ पु न वीत । इह या य ध क धि सा । व्याव ह य । पु का ग रु या ॥ नु
 या नि गि ज्ञा य न या ना क्रि यः भा ह न य क या ग न चानः ग । हान भा ह न य क या न य वा न ग या ग म्मा य ग न हान ज्ञा य ना ग व च न
 ग ल्यु का थ न ज्व य न मि ह न य प धा वि ग य स्य ग न ४ भा ह न य प धा वि ग न पा न स्य भा च न ए व ॥ ग न ४ पु र्व वि धा धि न
 नृ प ना ग क वि नः नृ ग य स ध दार नृ उ वा स ना पा य मा न नृ मि ह न य ह सा पा य म ग न धि न य ज या गि न म वृ ल न य ज
 व च न दान क ह द य स स म ४ स म्पा ति ग य म ह म्पा ति सि ग य व पु न ॥ अ स्मि दि न म ह म्पा दि न न ए व ॥ पु न
 वी न भा ह म यी रु या ग स र ग वि य धा या ॥ नृ उ य प नृ उ ॥ ग थ धा सा म म सि द्वा या थ वि षा दा या ॥ स्या
 य ध क रु ज न च ध क ध या ॥ पु न ल्यु का न ग ति स म यः प्रा ष्टः जा ग रि ष्य क का र्थ रु ज न गि का धि जी दा रु मा
 च का ॥ सा मा ष्ट ॥ ॥ ग न ४ प्रा ग नृ उ य म नि पु म्प ट्य क वि नै भा ह मा या नृ प का वि ग न क वि न नृ प

अथाना सकलदयाचोकष
अपिपामं पिपागकनो
अजाहदयकन

क वं स्यं नी अमा मया असु पिपानजन
क वं स्यं नी अमा मया असु पिपानजन

धजिगेनासर्ववादीविधानस्यैवाद्यय॥ गग॥ सर्ववादीसंपूर्णमागनास्थानेनमिपुविअय॥ गग॥

सूधमीवगिनीयो ज्ञानेनो नो सकलवादीकृतकुनाप्रो कविनकमात्रकृतयोः धृगुषमात्रेनाविभागः पुरुषागुपनाक्रमेण

सूधमीवगीसमृपाजिग्यसर्ववादीपुवाधयोक्मात्रस्यवचनसूत्रा॥ गथासगिसधमीवगि॥ पूर्वविधिआसम

नंसंरुक्थयने कायित्येनगनरे सोस्य धागगगपिकयाविभागं हान धृगुगी हागयमानरुगज्जुगयर्थयाजीयाः कमात्रसोया

चिग॥ गगुंकापित्यगगजसमात्मकेपुविअगिपुणसयने॥ गगुमनसमाताव्यदअयथस्यपुगुंमात्रसू

मासनधमकाययाद्यावसीया जाहदयकन हृपुगहृषनेवाअयुना जाहाहिकपदनानाजीवान दात्रककवित्रकमाते

धमीवगिवचनसवाद्यसंपुमादिग॥ सूष्यनवासय॥ गग॥ याद्यहियकसमागम॥ गग॥ दात्रकस्यपु

नयाः ज्ञापायागुद्वयमनाम जागद्वधमोरुहयाज दाहयाननिद्रिदाहयाः अग्निसंस्कारमयासेऽन धृगुपापेओकयायन

वैरु॥ खसुसूत्रया॥ जागद्वधमोरुवसन॥ धृगुगागाइगगजिजंअग्नितनसंस्कारपुपाग॥ गग॥ पायचिकीदि

दिपकायविधिपूर्वककृपाज्ञापाहृपाकर्मयानो सृणदिनसोयाविधिपूर्वकयानाकर्मविधिआपनयाजीवान

पेविधिपूर्वककृपाकर्मसमाचय॥ गग॥ वगुंरदिनविधिपूर्वकियाकर्मविधिस्थापयग॥ गग॥ धनेतिक

प्रायचिनुकाररुन॥

सपिनस १ जातसकीरुजधसंसायामाधयकाविष्काकक

यापुग धधकाधयाःधातज कायपुग४

धृगुप्रकाशं कृमाययातं तं विक्रयायितं किं जायात असत्वाद्वास्तविकं

विजकुमावनेः अहयितुं त्रययासः जायाति विष्णुककयागजाज्जते ॥ पुर्वदायकस्यः सद्यो जातिविरु निवृत्त्या पाया
समृद्धसकृदनेकोपाशुवयसा पुनर्वा धृगुपापसचयेयाया लीगनयागिद्वयनयाः अतोत्रमकजाजा
निनिर्णयं समदावयेकं ॥ तस्य गिपाथष्यपिगेवत्रकोइहत्यानिगु स्त्रो निवयवुर्गु ॥ ४॥ ४॥ ४॥ हिः आनयादि

धृगुतोतमकजागामिवमयूः धपापि हृदेवदह धका धक विवीचयागोव्वता गा जातस्त्रीनाघ रोगयाना
जाः कातमृग्यूरयागि प्रावधपापननयकवासरुतं सरुगुवर्षपर्यन्त धपाप रोगयाठागि आगि गार्ह ध

यातमनपादोगुहृसद्याचरुतं ॥ जनेयनिसः कल्पकल्यानकृपयइसनेः धमं या नागु कर्म कृयमरुणः वि
जातमन ॥ जन्मावर्क कृमपविचयेः पच्यमापयश्चाद्यागि स्तुतं जलं गन्तुं वगकाकयपि ॥ १॥ १॥ १॥ नाय

अंनगपूवपनि स्थनं जन्म मय पयाया

इयधनेगायागरन
नयकवासनां ५

नाद्वयनकयय

साय

कथक आस मदाग २ असाकं धृमि या अज

अथ वने रुपा गे नानो गे क मे रु व न हि रु त
"कातं च" रु तं कि द्वा तू द हि ना ॥ ग ग ६ ॥ उत्तर ए स न स्थि ताः दी र्घ न ट्यं स ह्म स मा च य ॥ मृ नि ष्य ज स्य स मृ पा च य

अथ पात्रिसंलग्न पूजाददक धिनेष्टसिचूयागि एगवसियाक विगिध्वगः रुसः हजुवृधसससिदयाचोकाकविपसन धमयानागिधधजुव
नवविन्दुः दन्दुवेपृथिविध्वजिगः सलग्नसयसमूपागिगः ॥ एगवः नससाजः सर्वयाक ददिनास्वस्वकर्मरुतः ॥

स्वकर्मैवेष्टुत्यः ४ त्वत्तगता ॥ गृन्नालगवकिं किंकर्म्मसमाचर ॥ एगवन्नस्प' वजकाय' सर्व' उ' ए' न

संपूर्ण भोगिभूत न संसृजं असिगिब्यं जगति हवन व्यापिगः ॥ देवाग्निं देवदेव नवसूक्तं रं व

गवनु ३ शगप्र १ मद्र १ वाषनना अरि शक आन दादिसक नसे नंद हिक मधि यप्र सार्थ न च नायाय मज्ज १ ॥ १॥ ५॥

यथात्रयासुप्रियसुशोभनः कथयन्तु गथाघातः
ज्ञान कर्मवशात्

मंशुका मागुवायुन हृदि धनाम
हृदयकं मागुवायुन हृदि धनाम
हृदयकं मागुवायुन हृदि धनाम

जकायागुपाषाणसहायनचरुयग ॥ पञ्चकुर्मवशासनं सैत्रफरुगयैद्वनममापिग ॥ रगवानुवाच
धंदस्यावांसलरासो निजजघः प्रकगुचिरुयानाहुमात्र वृद्धवमसंघयाअपेनजना अहमिबुर्गचयेयानाअः हुनमात्रः हान अविचिनमकसस
साधुगृधूमहाहृत्रकागुचिरुसमाधायगितस्वअपभंगत्वाँ वेवधेनामबुर्दसमावय ॥ गगुविचिम
कएनेत्रायानागेरुपिकवासकनदयाचोकप्रोनियाजिवयाभासायोगउधः धरुधु धुगुअहमिबुर्दचयेयानाः नोकअनयागुआहाठना
हानयकं संधयगुमहर्गिः सधप्रा निपुवाधया ॥ उगदि नबुर्दनाजसमावयागुीलाव्यधतस्यआहाः ॥
कवियरुमात्रनः आगतिरुयागं दारुयागं हि साकर्मयागः श्रीपगसुवीधधतीयागे वचनआहदयकाहृउपासनायाना अहमिबुर्द
वृमात्रस्यगुनविभुः धृष्टगुगास्यमावयग ॥ पञ्चकुमा० वस्यवचनपरिचिचिनेयग ॥ समूपासिगव्यमह
हि साधयागुहृग वृद्धयसया वृद्धयमयास्यआनमनका ॥
म्याहि सामाविधियाग ॥ अहंकाजीरुयागः धनियादिनसअहमिमवृत्तातपाउ अतातमनेदारुयागस्या
नावितं ॥ पञ्चकुअहमहृयागः अहमीउपासकर्ममयाग ॥ धनननजकसहगयाग ॥ गगुसंगाप

ॐ ^{उत्तरमाह} ^{पुनर्निर्माणं} ^{आदिदशाहं} ^{कर्मनादिना} ^{मृदिगाडया} ^{वगुर्वधधनया} ^{धुगुपुन्यया} ^{पुनर्विगतकाय}

सर्वजन्मजन्माह्वयं प्राप्तामि कापदं अहं अहं कर्मकायिगं चतुर्विधं विगं जुगत्पुन्यपुलवनं पुविहका
सवित्रहयाः दया चो कया प्रहं नाभ वजकायमवित्रहयाः जुह्विचिहं जदकायनधयाः लकयागसिनेः अहमिचिहं चययाग धुगुपुन्य
यश्मधनं सर्वपापश्रय ॥ वजकायमध्विचिहं एव ॥ अदकायनं सर्वपापनिमिगिबुद्धनाजसमावज ॥ जुग
यापुलवनः दया चो क दूख हू नाभन ^{यागहनेसेवापिसदोवचिभां अहयवदमिध्याकोमेहकगयगाकीया धुगुपुन्य}
त्युन्यपुलवनं सर्वदुःखकायिगं चक्राकेपाविपादसर्वसत्त्वाएयवतमिध्याकामपयिचिहं यत ॥ बुद्धना
नागुह्व ^{सकनदयाचोकेलायया} ^{धुगुपुन्ययापुलवनं} ^{संपूर्णनागुह्वनाभनसवित्रपाहृया} ^{आपुववहृया}
जनाह्वतं सर्वसंसारमाह्वसमपयिचिहं य ॥ जुगत्पुन्यपुलवनं सर्वपापनाभनपयिपुष्टागमापुषवधेय ॥ २१
पूयागुवर्धसमानं धिना ^{हान} ^{रुसेगावद्रावगायगा} ^{सपवादिहृया} ^{अहमिचिहं} ^{नागुपुन्ययागद्विधमाहना} ^{अहृया} ^{हृनाभन}
गुह्ववर्धसमानं ॥ गगहृवावादपयिचिहं य ॥ सपवादिहृवाजकर्मनाह्वतं गगहृवमाहनाभयग ॥

हनेअगित्याउगुः अगिसाह्वस्यः गाहाकस्यः जिह्वाः म्हरयाः अगिनकामलसुन्दरगह्वीयगुह्वनरुयाभत ॥

वचकदयाभवेदयाचो क ४
कवत्यरुयाभयगुगीयगाधहमयाध

विमलसूत्राय नमः ॥ धर्मसमाधि मनसा ॥

धर्मदत्ता गुणध

सिद्धयार्थं पञ्चकर्मदया धर्मनंगुननंप्रदया

हृद जंवेयसहाज

या हृत्पुमादपापसो ॥ धर्मसमाधाय ॥ बुद्धिं राजसमावनात्पुनः ॥ सिद्धयार्थं पञ्चकर्मदया धर्मनंगुननंप्रदया ॥ अकार
नमस्तु नमनिष्ठाया नो धर्मदत्ता गुणधने ॥ दायस्वाधु वेदु मायाधु गुणधु वः धियपूदं नं नंप्रदया ॥ द्वित्रिगुणवसंगविशुप्रमान
पिनलजयनः ॥ मृपवासकर्मनात्पुनः ॥ इवकि न्युनिभकजसमवे ॥ चगुदगदरुसंपूर्ण ॥ हास्ययास्यपुका
गजधसाभयागुगजदेगदिः ॥ यत्रपिकथयिनाचोनः ॥ स्वानमोशकावायागानः ॥ गुहाहृतिगयासायगुपः ॥ उगचैयोनोअ ॥ धगुपुन्ययाक
अगदगदिगं ॥ गग ॥ सर्वातंकातह ॥ धिगपुष्यमाता ॥ अहिगं ॥ गुहाहृतिं किंपुमानेन ॥ बुद्धकर्मसमाचन ॥ गुग
अनूरावनः ॥ गुगंधवासनादया ॥ हंगुमित्वाहया ॥ गुहाहृतिमाहयासंगुनदयाचीकः ॥ ध्याः मः ॥ वाज ॥ तात्रताअ
त्यन्यानूरावनं ॥ जीतस्वरूपः ॥ गुगंधयुक् ॥ अक ॥ ० ॥ न्दियं गुहाहृतिमासंगुनसंपूर्ण ॥ नृपगीगंवाघपैयिवर्जि
उकचिर्दयानोअ ॥ गुहाहृतिमाहया ॥ उपाधगवुद्धया ॥ धर्मदत्ता गुणध ॥ नृनंप्रदयः ॥ सर्ववदुन ॥ गजपकागरुगसहित
न ॥ ॥ उकचिर्दयं ॥ गुहाहृतिमाहया ॥ उपाधगवुद्धया ॥ धर्मदत्ता गुणध ॥ नृनंप्रदयः ॥ सर्ववदुन ॥ गजपकागरुगसहित
हनेअगितागाअः ॥ आसनगात्रगाअः ॥ संगुहृगुहृचिर्दयानाअः ॥ उरुमवर्द्धवतपापूधनगधिंशुहृदध

असंख्यानं

मिसानंगिया पातपुनावनयागुअसन नृहयाध

मानं

जानं ॥ ४ ॥ पुना ॥ कवयः संपूर्णरुया ॥ वनहृयगः ॥ हायगुः ॥ नथायग

ज्ञान
जयिगुआसन
वृद्धवर्धिसुध
आसन
सर्गमयपागायंतानः
विष्णुआसन
वृद्धवर्धिसुध
आसन
महादेवआसन
धधिगुरुतान

साधकवितकूमाययाग॥ प्रासनगिजत्तासनः स्वर्गमयपागातासनः विष्णुवृद्धवर्धिसुधनेपायग॥ भवनेमि

यानेन चययायमरुस्त्रिनासनवाडाजमायतंगयाग॥ गग॥ गिजत्तस्य समुत्पप्रातंग किमेदावगठं सेवेताकपाता
स्वाययागः गुपू माप्रः वेवाः दशः किजाधमधकात्रिः नमस्काययानाज नमिगुरूपो उरुमगुः सितसेउवीषचूजमनिदयाजतविशस
चगुवमागापिगाज हृजागागिगिसर्वेकगाजतिनमस्तुत्या॥ नमिगुवृद्धवर्धिसुधनेपायग॥ भवनेमि
अभिउत्तजिप्ररुया ॥ सकृत्प्रोक्तया दर्शनमयाक

उच्चगिजसामान्यसेवेताकस्य दंजननराविष्यगि॥ उच्चरुजः अगिकातवनीचकनताकस्य केअसंपूर्ण॥

धूमिऊनपूयेरुया दगाकूअययागुपूयापुतावेउयाषदवगयापुतावे
उगलेरुतउनेदगकअतपुब्धपुतावेउयाषदवगयापुतावे
दगाकूअययागुपूयापुतावेउयाषदवगयापुतावे
कूअतकातिग॥ गिजत्तस्य अयवनीजत्तापयसयुनेरावगः सितसेउवीषचूजमनिदयाजतविशस
कूअतकातिग॥ गिजत्तस्य अयवनीजत्तापयसयुनेरावगः सितसेउवीषचूजमनिदयाजतविशस

ज्ञान

[illegible]

५० कुर्यात्

सवित्रहया ५

यका १

अज्ञानाज्ञा ३

कथि३ यथा३२

Georgius

वाधिमंलुपमहाविहारीमंलुपंनये
विपुलतयाभयनभयनना
जिं वनागुयायकावनसं
वाधिसन्याय
निर्मिनिन
वापदभना च्यागात्रंभयान

धिमंलुपनसंपूर्णगुणतुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकाजर्णवाधिसन्याय
नसंलुगगधाययानिः
हगुनभयनभयन

ज्ञान
संपूर्णगुणतुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकाजर्णवाधिसन्याय
संपूर्णगुणतुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकाजर्णवाधिसन्याय

यशस्य॥प्रातिहिंसापयसाहयभागेवगुणतुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकाजर्णवाधिसन्याय
मिसाभिसगनेपुन्यगुणतुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकाजर्णवाधिसन्याय

लकातुल्यभयनममंलुपार्थपयार्थसिद्धिकाजर्णवाधिसन्याय
गवंहस्वामिःदयाचोकसर्वहृनाथधायकाविष्णुकः
रगवज्जगच्छास्त्रा॥रगवन्सर्वहृनाथः
चोकजिगकनाविष्णयमायथधधकधगवेचनहृना

सुममेनस्वादय॥उगवचनगृणूना॥रगवानूवाव॥साधूगृणूमेहरगगुकागुसंजुफगावदा
केवल्यविहारीहृयगःधायगृह
मामरगुःगृणूदिनेरचिरुयाना

मिर्मिनय
गुःनीगःवायगृह
जिगकन्य
जगह
यगृह
रुवर